بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 11

# राह-ए-ईमान

नवम्बर
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

## विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन.....2
2. पवित्र हदीस .....2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.....3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय .....6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना .....7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 24.11.2023).....8
8. वास्तविक इस्लामी खिलाफ़त .....12
9. अरबईन नम्बर-4.....18
10. एक खादिम द्वारा लिखी गई नज़्म.....24
11. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
12. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

**सम्पादक**
**फ़रहत अहमद** आचार्य

**उप सम्पादक**
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
**संपादक - मंडल**
फज़ल नासिर
**सेटिंग**
फ़रहत अहमद आचार्य
**टाइटल डिज़ाइन**
नूरुद्दीन नूरी
**मैनेजर**
अतहर अहमद शमीम M.A.
**कार्यालय प्रभार**
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
**Editor- 9115040806, Manager- 9815639670**

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

**वार्षिक मूल्य: 130 रुपए**

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

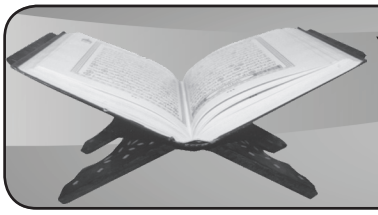

# पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ؕ وَ اللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ۔

**अनुवाद:-** तू कह दे कि क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर उन की पूजा करते हो जिन में न तो तुम्हें हानि पहुँचाने की शक्ति है तथा न लाभ पहुँचाने की और अल्लाह ही है जो बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है। 78- तू कह दे कि हे अहले किताब ! अपने धर्म के विषय में अनुचित (ढंग से) अतिश्योक्ति (बढ़ा-चढ़ा कर बातें करने) से काम न लो और उन लोगों की मनोकामनाओं के पीछे न चलो जो इस से पहले पथ-भ्रष्ट हो चुके हैं और उन्होंने कई दूसरे लोगों को भी पथ भ्रष्ट किया है तथा वे सीधी राह से भटक गए हैं। (अल माइदा : 77-78)

# पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

**अनुवाद:** हज़रत बराअ वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्ल ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद के अवसर पर पचास धनुर्धारियों को अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की निगरानी में एक पहाड़ी दर्रे की निगरानी के लिए नियुक्त कि या और उन्हें ताकीद फरमाई कि जब तक मैं अपना आदमी भेज कर तुम को न बुलाऊँ तुम अपनी जगह से नहीं हटना चाहे हम सब शहीद हो जाएं और पक्षी हमें नोच नोच कर खाना शुरू कर दें। चाहे हम लोग जीत जाऐं किसी भी सूरत में अपनी जगह नहीं छोड़नी। बराअ कहते हैं कि अल्लाह तआला ने काफिरों को हराया और मैंने काफिरों की महिलाओं को देखा कि वे पहाड़ पर चढ़ी जा रही हैं। यह देखकर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के साथी कहने लगे लूट का माल अर्थात क़ौम लूट का समान जमा कर रही है। क़ौम विजय पा चुकी है अब इंतज़ार किस बात का चलो चल कर हम भी लूट का सामान इकट्ठा करें। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर कहने लगे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान भूल गए हो? इस पर उनके साथी कहने लगे लोग सब लूट का समान ले जायेंगे और यह कहते हुए इन लोगों ने वह जगह छोड़ दी। इस अवज्ञा के कारण उनकी जीत हार में बदल गई और मुसलमानों का बुरा हाल हुआ। (अबु दाऊद किताबुल जिहाद)

★ ★ ★

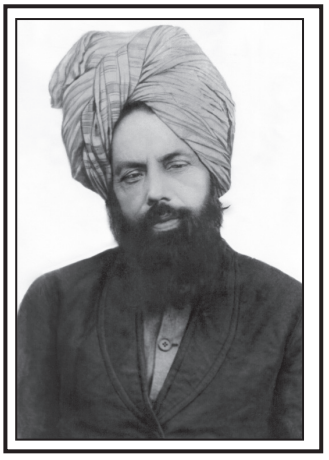

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

**हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-**

# मौत को याद रखें

अफ़सोस उसको मौत याद नहीं। मौत क्या दूर है? जिसकी 50 वर्ष की उम्र हो चुकी है। यदि वह ज़िन्दगी पा ले तो दो-चार वर्ष और पा लेगा या ज़्यादा से ज्यादा 10 वर्ष। अंततः मरना होगा। मौत आना एक पक्की बात है जिससे कदापि कोई नहीं बच सकता। मैं देखता हूं कि लोग रुपया-पैसा के हिसाब में ऐसे परेशान रहते हैं कि कोई सीमा नहीं मगर उम्र का हिसाब कभी भी नहीं करते। अभागा है वह इन्सान जिसको उम्र के हिसाब की ओर ध्यान नहीं। सबसे ज़रूरी और हिसाब के लायक जो चीज़ है वह उम्र ही तो है। ऐसा न हो कि मौत आ जाए और यह हसरत लेकर दुनिया से जाए। क़ुरआन शरीफ़ से साबित होता है कि जिस तरह जन्नत की ज़िन्दगी इसी दुनिया से शुरू हो जाती है उसी तरह दोज़ख़ की ज़िन्दगी भी यहीं से ही शुरू हो जाती है। जब इन्सान हसरत के साथ मरता है तो बहुत बड़े नर्क में होता है, जब देखता है कि अब चला। हैज़ा, प्लेग बुखार, धड़कन या किसी और बीमारी में मुब्तिला होता है तो मौत से पहले एक मौत आ जाती है जो दिल और रूह को कमज़ोर कर देती है और वह भी एक बड़ी हसरत की होती है। बहुत से रोग ऐसे हैं कि दो मिनट भी दम लेने नहीं देते और झटपट काम तमाम कर देते हैं। जिसने एक दिन भी पढ़ा कि मैं मरने वाला प्राणी हूं वह उस आज़ाब से बचने की फ़िक्र में लग गया जो इन्सान को हसरत के रंग में खा जाता है।

हमारे क़रीबी रिश्तेदारों में से एक की आंतों में अचानक सख़्त दर्द हुआ और पेशाब बंद हो कर काले रंग की एक उल्टी हुई और उसके साथ ही गर्दन लटक गई। उस पल उसने कहा कि अब मालूम हुआ कि दुनिया कुछ चीज़ नहीं। कौन कह सकता है कि हम सब जो इस समय यहां मौजूद हैं अगले साल भी जरूर होंगे। हमारे बहुत से मित्र जो पिछले साल मौजूद थे आज नहीं हैं। उन्हें क्या मालूम था कि अगले साल हम न होंगे। और किसको मालूम है कि मरने वालों की सूची में किस-किस का नाम है। इसलिए बड़ा ही मूर्ख और नादान है वह आदमी जो मरने से पहले ख़ुदा से सुलह नहीं करता और झूठी बिरादरी को नहीं छोड़ता।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

★ ★ ★

# रूहानी ख़ज़ाइन

## पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

**(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)**

**तीसरे प्रश्न का उत्तर...**

हम बार-बार लिख चुके हैं कि इस दावे को तर्कहीन नहीं समझना चाहिए सच्चे और झूठे धर्म में एक अंतर आकाश पर है और एक पृथ्वी पर। पृथ्वी के अन्तर से अभिप्राय वह अन्तर है जो मनुष्य की बुद्धि और उसकी अन्तर्आत्मा तथा इस संसार का कानून-ए-क़ुदरत उसकी व्याख्या करता है। अत: ईसाई धर्म और इस्लाम को जब इस कसौटी के अनुसार जांचा जाए तो स्पष्ट सिद्ध होता है कि इस्लाम वह स्वाभाविक धर्म है जिसके सिद्धान्तों में कोई बनावट और तकल्लुफ़ नहीं और जिसके आदेश नए बनाये हुए और कोई बनावटी बात नहीं और कोई ऐसी बात नहीं जो ज़बरदस्ती स्वीकार करानी पड़े और जैसा कि ख़ुदा तआला ने जगह-जगह स्वयं फ़रमाया है पवित्र क़ुर्आन प्रकृति के ग्रन्थ के समस्त ज्ञानों और उसकी सच्चाइयों को स्मरण कराता और इसके विपरीत कोई नई बातें प्रस्तुत नहीं करता अपितु वास्तव में उसी के सूक्ष्म अध्यात्म ज्ञान प्रकट करता है इसके विपरीत ईसाइयों की शिक्षा जिसका इंजील पर हवाला दिया जाता है एक नया ख़ुदा प्रस्तुत कर रही है जिसकी आत्महत्या पर दुनिया के गुनाह और अज़ाब से मुक्ति निर्भर और उसके दु:ख उठाने पर जनता का आराम निर्भर और उसके अपमानित और तिरस्कृत होने पर जनता का सम्मान निर्भर समझा गया है। फिर वर्णन किया गया है कि वह ऐसा विचित्र ख़ुदा है कि उसकी आयु का एक भाग शरीर और शरीर के दोषों से पवित्रता में गुज़रा है और आयु का दूसरा भाग (किसी अज्ञात दुर्भाग्य के कारण) हमेशा के लिए शरीर धारण करने और परिवर्तनशीलता में क़ैद हो गया और गोश्त पोस्त हड्डियाँ इत्यादि सब के सब उसकी रूह के लिए अनिवार्य हो गए और इस साक्षात् शरीर के कारण अब हमेशा उसके साथ रहेगा, उसको नाना प्रकार के दु:ख उठाने पड़े अन्त में दुखों के प्रभुत्व से मर गया और फिर ज़िन्दा हुआ और फिर उसी शरीर ने फिर आकर उसको पकड़ लिया और अनश्वर तौर पर उसे पकड़े रहेगा। कभी छुटकारा नहीं होगा। अब देखो कि क्या कोई सही प्रकृति इस आस्था को स्वीकार कर सकती है? क्या कोई पवित्र अन्तर्आत्मा इसकी गवाही दे सकती है? क्या प्रकृति का नियम निर्दोष, बेऐब तथा अपरिवर्तनीय ख़ुदा के एक भाग के लिए ये घटनाएँ और आपदाएं वैध रख सकता है कि उसको हमेशा प्रत्येक संसार के पैदा करने और फिर उसको मुक्ति देने के लिए एक बार मरना अवश्यक है और आत्महत्या के अतिरिक्त अपनी किसी भलाई पहुँचाने की विशेषता को प्रकट नहीं कर सकता और न किसी प्रकार का अपनी सृष्टि को दुनिया या आखिरत में आराम पहुंचा सकता है। स्पष्ट है कि यदि ख़ुदा तआला को अपनी दया बन्दों पर उतारने के लिए आत्महत्या की आवश्यकता है तो इस से अनिवार्य ठहरता है कि उसके साथ हमेशा मौत की घटना घटती रहे और पहले भी असंख्य मौतों का स्वाद चख चुका हो और दूसरे अनिवार्य ठहरता है कि हिंदुओं

के परमेश्वर की तरह विशेषताओं से निलंबित हो। अब स्वयं ही विचार करो कि क्या ऐसा असहाय और थका हुआ ख़ुदा हो सकता है कि जो बिना आत्महत्या के अपनी जनता को कभी तथा किसी युग में कोई भलाई नहीं पहुंचा सकता। क्या यह कमज़ोरी और अशक्ति की हालत सर्वशक्तिमान ख़ुदा के योग्य है? फिर ईसाइयों के ख़ुदा की मौत का परिणाम देखिये तो कुछ भी नहीं। उनके ख़ुदा के प्राण गए परन्तु शैतान के अस्तित्व और उसके कारखाने का एक बाल भी बीका न हुआ। वही शैतान और वही उसके चेले जो पहले थे अब भी हैं। चोरी, डकैती, व्यभिचार, क़त्ल, झूठ बोलना, मदिरापान, ★ द्यूतक्रीड़ा, दुनिया परस्ती, बेईमानी, कुफ्र, शिर्क, नास्तिकता और अन्य सैंकड़ों प्रकार के अपराध जो मसीह के मस्लूब होने से पूर्व थे अब भी उसी ज़ोर और शोर में हैं अपितु पहले से कुछ बढ़-चढ़ कर। उदाहरणतया देखिये कि उस युग में कि जब अभी मसीहियों का ख़ुदा जीवित था ईसाइयों की हालत अच्छी थी ज्यों ही उस ख़ुदा पर मौत आई जिसको कफ़्फ़ारा कहा जाता है तभी से विचित्र तौर पर शैतान इस क़ौम पर सवार हो गया और गुनाह, अवज्ञ और नफ़्स परस्ती के हज़ारों दरवाज़े खुल गए। अत: ईसाई लोग स्वयं इस बात के क़ाइल हैं और पादरी फंडर साहिब लेखक "मीज़ानुल हक़" कहते हैं कि ईसाइयों के गुनाहों की प्रचुरता, उनकी आन्तरिक बदचलनी और पाप तथा अश्लीलता के फैलने के कारण ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईसाइयों को दण्ड देने और चेतावनी देने के उद्देश्य से भेजे गए थे। अत: इन वर्णनों से स्पष्ट है कि अधिकतर गुनाहों और पाप का तूफ़ान मसीह के मस्लूब होने के बाद ही ईसाइयों में उठा है। इस से सिद्ध है कि मसीह का मरना इस उद्देश्य से नहीं था कि गुनाह की तेज़ी उसकी मृत्यु से कुछ कमी की तरफ़ हो जाएगी उदाहरणतया उसके मरने से पूर्व यदि लोग बहुत शराब पीते थे या यदि अत्यधिक व्यभिचार करते थे अथवा यदि पक्के दुनियादार थे तो मसीह के मरने के पश्चात यह प्रत्येक प्रकार के गुनाह दूर हो जायेंगे क्योंकि यह बात सबूत से निस्पृह है कि जितना अब मदिरापान, दुनिया परस्ती और व्यभिचार विशेष तौर पर यूरोप के देशों में उन्नति पर है कोई दक्ष व्यक्ति कदापि नहीं सोच सकता कि मसीह की मृत्यु से पहले यही तूफ़ान पाप और अश्लीलता का मचा हुआ था अपितु उसका हज़ारवाँ भाग भी सिद्ध नहीं हो सकता तथा इन्जीलों पर विचार कर के पूर्ण सफ़ाई से खुल जाता है कि मसीह को कदापि स्वीकार न था कि यहूदियों के हाथों पकड़ा जाए और मारा जाए और सलीब पर खींचा जाए क्योंकि यदि यही स्वीकार होता तो पूरी रात इस बला के दूर होने के लिए क्यों रोता रहता और रो-रो कर क्यों यह दुआ करता कि हे अब्बा! हे बाप!! तू सब कुछ कर सकता है यह प्याला मुझ से टाल दे अपितु सच यही है कि मसीह अपनी इच्छा के विपरीत अकस्मात तौर पर पकड़ा गया और उस ने मरते समय तक रो-रो कर यही दुआ की है कि हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया। इस से स्पष्टता के साथ सिद्ध होता है कि मसीह ज़िन्दा रहना तथा कुछ और दिन दुनिया में ठहरना चाहता था और उसकी रूह अत्यन्त बेचैनी से तड़प रही थी कि किसी प्रकार उसके प्राण बच जाएँ परन्तु उसकी इच्छा के बिना यह सफ़र उसके सामने आ गया था।

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 64-69)

★ ★ ★

# सम्पादकीय

# धर्मों के बीच सद्भाव

धार्मिक मतभेद को लेकर हमारे देश में आए दिन कोई न कोई विवाद उत्पन्न होता रहता है और फ़िर उससे बात आगे बढ़ते बढ़ते जान माल की हानि तक पहुँच जाती है। और यह धार्मिक मतभेद का विषय ऐसा होता है कि उसके सामने सरकारें भी कहीं न कहीं विवश नज़र आती हैं। क्या धर्मों के बीच सामंजस्य का कोई ऐसा मार्ग है या कोई ऐसा प्लेटफार्म है जिस पर खड़े होकर यह मतभेद और झगड़े मिटाए जा सकें। पवित्र क़ुरआन ने इसका एक मार्ग प्रस्तुत किया है फ़रमाता है-

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا

"अर्थात (हे मुहम्मद) कह दे कि हे अहल-ए-किताब (अर्थात उन धर्मों के अनुयायियो जिनको ईश्वर की ओर से कोई धर्मविधान दिया गया है) उस बात की ओर आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच साझी है कि हम अल्लाह (परमेश्वर, परब्रह्म, परमात्मा) के सिवा किसी की उपासना नहीं करेंगे और न ही किसी चीज़ को उस का भागीदार ठहराएँगे।" (आले इमरान- 3/65)

प्रिय पाठको! निम्न स्तर की बातों को यदि छोड़ दें तो केवल यह एक बात ही धर्मों के बीच आपसी प्रेम और सद्भाव के लिए पर्याप्त है कि हम सबका ईश्वर एक है और हम सब उसी की सृष्टि हैं फिर विवाद और नफ़रत कैसी? हर धर्म का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति ही तो है, फिर लड़ाई क्यों?

पवित्र क़ुर्आन इस विषय में भी हमारा मार्गदर्शन करता है जिसका पालन करके हमें इसी संसार में ईश्वर का दर्शन प्राप्त हो सकता है। जैसा कि वह फ़रमाता है-

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا (अलकहफ़-111)

अर्थात् जो व्यक्ति चाहता है कि इसी संसार में ईश्वर का दर्शन हो जाए जो वास्तविक ईश्वर तथा स्रष्टा है तो चाहिए कि वह ऐसे शुभ कर्म करे जिनमें किसी प्रकार का विकार न हो अर्थात् उसके कर्म न किसी को दिखाने के लिए हों, न उनके कारण हृदय में घमंड पैदा हो कि मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ और न वे कर्म अपूर्ण और अधूरे हों और न उनमें कोई ऐसी दुर्गंध हो जो व्यक्तिगत प्रेम के विपरीत हो बल्कि चाहिए कि निष्ठा एवं वफ़ादारी से भरे हुए हों तथा उस के साथ यह भी चाहिए कि प्रत्येक प्रकार के शिर्क (ख़ुदा के साथ भागीदार ठहराना) से बचाव हो। न सूर्य, न चन्द्रमा, न आकाश के सितारे, न वायु, न अग्नि, न पृथ्वी की कोई ऐसी वस्तु उपास्य ठहराई जाए और न संसार के साधनों को ऐसा सम्मान दिया जाए तथा उन पर ऐसा भरोसा किया जाए कि मानो वह ख़ुदा के भागीदार हैं और न अपने साहस और प्रयास को कुछ चीज़ समझा जाए क्योंकि यह भी शिर्क के प्रकारों में से एक प्रकार है बल्कि सब कुछ करके भी यह समझा जाए कि हमने कुछ नहीं किया। यदि हम ऐसा करते हैं तो निश्चित रूप से हमें ईश्वर भी मिलेगा और परस्पर सद्भाव से नफरत और घृणा भी दूर होगी और देश उन्नति करेगा अन्यथा देश की बुद्धि, बल, संपत्ति और युवा पीढ़ी इसी धार्मिक उन्माद तथा मतभेद की भेंट चढ़ती रहेगी। **फ़रहत अहमद आचार्य**

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

## मुनाजात और तब्लीग़-ए-हक़

ऐ ख़ुदा ऐ कारसाज़[11] ओ ऐब[2] पोश[3] ओ किरदगार[4]
ऐ मेरे प्यारे मेरे मुहसिन[5] मेरे परवरदिगार[6]
किस तरह तेरा करूँ ऐ ज़ुलमिनन[7] शुकर ओ सिपास[8]
वह ज़ुबान लाऊँ कहाँ से जिससे हो ये कारोबार
बदगुमानों[9] से बचाया मुझ को ख़ुद बन कर गवाह
कर दिया दुश्मन को इक हमले से मग़लूब[10] ओ ख़्वार[11]
काम जो करते हैं तेरी राह में पाते हैं जज़ा[12]
मुझ से क्या देखा के यह लुत्फ़ ओ करम[13] है बार-बार
तेरे कामों से मुझे हैरत है ऐ मेरे करीम !
किस अमल पर मुझ को दी ह खिल्लते[14] कुरब ओ जवार[15]
किर्म-ए-खाकी[16] हूँ मेरे प्यारे, न आदम ज़ाद हूँ
हूँ बशर की जाए नफ़रत और इन्सानों की आर[17]
यह सरासर फ़ज़ल ओ एहसान है कि मैं आया पसन्द
बरना दरगाह[18] में तेरी कुछ कम न थे ख़िदमत गुज़ार[19]
दोस्ती का दम जो भरते थे वह सब दुश्मन हुए
पर ना छोड़ा साथ तूने ऐ मेरे हाजत बरार[20]
ऐ मेरे यारे यगाना ऐ मेरी जाँ की पनाह
बस है तू मेरे लिए मुझ को नहीं तुझ बिन बकार
मैं तो मर कर ख़ाक होता गर न होता तेरा लुत्फ़
फिर ख़ुदा जाने कहाँ यह फेंक दी जाती ग़ुबार[12]
ऐ फ़िदा[2] हो तेरी राह में मेरा जिस्म ओ जानो दिल
मैं नहीं पाता कि तुझसा कोई करता हो प्यार

---

1. काम बनाने वाला। 2. बुराई। 3. छुपाने वाला। 4. ख़ुदा तआला। 5. उपकार करने वाला। 6. ख़ुदा (पालनहार)। 7. इहसान करने वाला। 8. शुक्रिया। 9. बुरा चाहने वाला। 10. परास्त। 11. अपमानित। 12. बदला। 13. प्यार तथा उपकार। 14. उपाधि, वस्त्र। 15. सानिध्व। 16. मिट्टी के कीड़े की तरह। 17. शर्म। 18. चौखट। 19. सेवक। 20.मुरादें पूरी करने वाला। 21. धूल मिट्टी। 22.

# सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 24.11.2023
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नियुक्त होने का उद्देश्य एवं ज़माने को सुधारक की आवश्यकता।
मध्यपूर्व ऐशिया में युद्ध के कारण पुन: विशेष दुआओं की प्रेरणा।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने लेख पत्रों एवं अपने उपदेशों में असंख्य स्थानों पर अपने आने का उद्देश्य तथा इस युग में किसी सुधारक के आने की आवश्यकता का बयान फ़रमाया है। और यह साबित फ़रमाया है कि आपका अल्लाह तआला की ओर से आना पूर्णत: समय की आवश्यकतानुसार था तथा अल्लाह तआला की सुन्नत (मार्ग दर्शन) और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार है, अत: आप फ़रमाते हैं-

सम्पूर्ण तर्क वितर्क के साथ समझाने के लिए मैं यह व्यक्त करना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला ने इस ज़माने को अन्धकारमय पाकर एवं दुनिया को मूर्छित एवं इंकार एवं शिर्क में लिप्त देख कर ईमान एवं सत्यनिष्ठ एवं तक्वा एवं ईशप्रायणता तो मिटते हुए देख कर मुझे भेजा कि ता वह दोबारा दुनिया में इलमी और अमली तथा नैतिकता और ईमानी सच्चाई को स्थापित करे और ता इस्लाम को उन लोगों के हमले से बचाए जो दर्शन शास्त्र एवं प्रकृतिवाद, अवैध को वैध करके एवं शिर्क एवं नास्तिकता के लिबास में इस इलाही अभियान को कुछ हानि पहुंचाना चाहते हैं। सो, हे हक़ के चाहने वालो! सोच कर देखो कि क्या यह समय वही समय नहीं है जिसमें इस्लाम के लिए आसमानी मदद की आवश्यकता थी। क्या अभी तक तुम पर यह साबित नहीं हुआ कि गत शताब्दी में, जो तेह्वीं शताब्दी थी, क्या क्या दु:ख एवं कष्ट इस्लाम पर पहुंच गए तथा अन्धकार के फैलने से क्या क्या असहनीय पीड़ाएँ हमें उठानी पड़ीं। क्या अभी तक तुमने पता नहीं किया कि किन किन बलाओं ने इस्लाम को घेरा हुआ है। क्या इस समय तुमको यह जानकारी नहीं मिली कि कितने अधिक लोग इस्लाम से

निकल गए, कितने ईसाईयों में जा मिले, कितने नास्तिक एवं प्रकृतिवादी हो गए तथा कितनी अधिक शिर्क एवं नई नई बुराईयों ने तौहीद तथा सुन्नत का स्थान ले लिया और कितना अधिक इस्लाम के रद्द के लिए किताबें लिखी गईं एवं दुनिया में प्रकाशित की गईं, सो तुम अब सोच कर कहो कि क्या अब अनिवार्य नहीं था कि ख़ुदा तआला की ओर से इस शताब्दी पर कोई ऐसा व्यक्ति भेजा जाता जो बाहरी हमलों का मुक़ाबला करता। यदि आवश्यक था तो तुम जानते बूझते इलाही अनुकम्पा को रद्द मत करो तथा इस व्यक्ति से विमुख मत हो जाओ जिसका आना इस शताब्दी पर, इस शताब्दी के लिए उपयुक्त एवं अनिवार्य था तथा जिसकी सूचना आरम्भ से ही नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी थी।

इसी तरह किसी आने वाले की सच्चाई को जांचने परखने के स्तर को बयान करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

किसी व्यक्ति के सच्चा होने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसकी खुली खुली ख़बर किसी आसमानी किताब में मौजूद भी है। यदि यह शर्त आवश्यक है तो किसी नबी की नबुव्वत साबित नहीं होगी। वास्तविकता यह है कि किसी व्यक्ति के नबुव्वत के दावे पर सबसे पहले ज़माने की ज़रूरत को देखा जाता है, फिर यह भी देखा जाता है कि वह उपयुक्त समय पर आया कि नहीं, फिर यह भी देखा जाता है कि ख़ुदा ने उसका समर्थन किया है कि नहीं, फिर यह भी देखना होता है कि दुशमनों ने जो आपत्तियाँ उठाई हैं उन आपत्तियों को पूरा पूरा जवाब भी दिया गया है या नहीं।

जब ये सारी बातें पूरी हो जाएँ तो मान लिया जाएगा कि वह इंसान सच्चा है, अन्यथा नहीं। अब साफ़ ज़ाहिर है कि ज़माना अपनी स्थिति से स्वयं याचना कर रहा है कि इस समय इस्लामी मतभेदों को दूर करने के लिए तथा बाहर के हमलों से इस्लाम को बचाने के लिए तथा दुनिया में विलुप्त हो गई आध्यात्मिकता को पुन: स्थापित करने के लिए नि:सन्देह एक आसमानी सुधारक की आवश्यकता है जो दोबारा विश्वास से परिपूर्ण करके ईमान की जड़ों को पानी देवे तथा इस तरह से बदी एवं पाप से छुड़ा कर नेकी एवं सत्यनिष्ठा की ओर अग्रसर करे। सो ठीक समय की आवश्यकता अनुसार मेरा आना ऐसा साफ़ है कि मैं सोच नहीं सकता कि पक्षपाती के अतिरिक्त कोई इससे इंकार कर सके, तथा दूसरी शर्त अर्थात यह देखना कि नबियों के द्वारा बताए गए समय पर आया है कि नहीं, यह शर्त भी मेरे आने से पूरी हो गई, क्यूँकि नबियों ने यह पेशगोई की थी कि जब छटा हज़ार पूरा होने को होगा तब वह मसीह प्रकट होगा। सो चांद के हिसाब से छटा हज़ार पूरा होने को है, इसके अतिरिक्त कि हमारे नबी स. ने फ़रमाया था कि हर एक शताब्दी के सिर पर मुजद्दिद आएगा जो दीन को ताज़ा करेगा और अब इस चौधवीं शताब्दी में से इक्कीस वर्ष बीत चुके हैं तथा बाईसवाँ वर्ष जा रहा है। क्या यह इस बात का निशान नहीं कि मुजद्दिद आ गया है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि गैर लोग मानें या न मानें, हमारे विरोधी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई को स्वीकर करें या न करें परन्तु ये तो स्वयं भी पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि इस्लाम में किसी मेहदी और सुधारक की आवश्यकता है जो इस्लाम की नाव को संभाले। परन्तु जो आया है, पेशगोईयों के अनुसार आया, जो समय की आवश्यकतानुसार आया, उसको मानने को तय्यार नहीं। हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम ने केवल दावा पेश नहीं किया बल्कि इस दावे के साथ अंसख्या निशान भी प्रकट किए। एक स्थान पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि आज से तेईस वर्ष पूर्व बराहीने अहमदिया में इलहाम मौजूद है कि लोग कोशिश करेंगे कि इस सिलसिले को मिटा दें तथा हर एक चाल चलेंगे परन्तु मैं इस सिलसिले को बढ़ाऊँगा तथा पूरा करूँगा तथा वह एक सेना हो जाएगा तथा क़यामत तक उनका गल्ब: रहेगा तथा मैं तेरे नाम को दुनिया के किनारों तक विख्यात कर दूँगा तथा लोग झुंड के झुंड दूर से आएँगे तथा हर एक ओर से धन की सहायता आएगी तथा मकानों को विस्तार दो कि यह तय्यारी आसमान पर हो रही है।

अब देखो, किस ज़माने की यह पेशगोई है जो आज पूरी हुई, जो आँखों वाले हैं इनको देख रहे हैं, किन्तु जो अन्धे हैं उनकी दृष्टि में अभी तक कोई निशान प्रकट नहीं हुआ।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज भी अहमदिया जमाअत की उन्नति तथा लोगों का लाखों की संख्या में जमाअत में शामिल होना, क़ुर्बानियों में बढऩा, आपकी सच्चाई का प्रमाण है। आज दुनिया का कोई देश ऐसा नहीं जहाँ आप अलैहिस्सलाम का पैगाम न पहुंचा हो, जहाँ आप अलै. के पैगाम के कारण सत्यनिष्ठ लोगों में इस्लाम की ओर ध्यान न पैदा हुआ हो, बल्कि कई स्थानों पर ऐसी घटनाएँ हुई हैं कि जहाँ अल्लाह तआला ने स्वयं लोगों का मार्ग दर्शन किया तथा वे जामअत में शामिल हुए। विरोधियों के विरोध के बावजूद जमाअत के लोगों में अल्लाह तआला ने ईमान को मज़बूत फ़रमाया तथा फ़रमाता चला जा रहा है। आज भी जो हम ये इलाही समर्थन के दृश्य देख रहे हैं, ये एक अहमदी के लिए ईमान को सुदृढ़ बनाने का साधन है।

इसके उपरान्त हुज़ूरे अनवर ने दुनिया भर से दिव्य स्वभाव लोगों के सत्य को स्वीकार करने तथा ईमान एवं विवेक में उन्नति के विभिन्न वृत्तांत बयान फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- किस तरह अल्लाह तआला लोगों के दिल इस्लाम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर फेर रहा है। कहाँ तो ईसाईयत दुनिया में अपने झंडे गाडऩे की बात करती थी और कहाँ अब ईसाई हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे तले आ रहे हैं। ये सब देख कर भी इन तथाकथित धर्म के ठेकेदारों की आँखें नहीं खुलतीं तो फिर इनका मामला ख़ुदा तआला के साथ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से जो अल्लाह तआला इस्लाम के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए अहमदिया जमाअत के द्वारा काम करवा रहा है, उसने तो इन्शाअल्लाह तआला फैलना है और फूलना है, कोई नहीं जो इस ख़ुदाई काम को रोक सके, किन्तु हर अहमदी को इस बात को भी समझना चाहिए कि केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को मान लेना की काफ़ी नहीं है बल्कि हमें अपने अन्दर वे शुभ बदलाव पैदा करने होंगे जो अल्लाह तआला की भेजी हुई शिक्षा का मूल स्वरूप हों, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलने का अमली रूप हों, और जब यह होगा तो तब ही हम अल्लाह तआला की कृपाओं के वारिस भी बनेंगे। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने फ़लिस्तीन के मुसलमानों के लिए दुआ की पुन: तहरीक करते हुए फ़रमाया कि फ़लिसतीनियों के लिए भी दुआएँ करते रहें, अल्लाह तआला उन्हें उस अत्याचार से मुक्ति दे जो उन पर हो

रहा है। कहते हैं कि अब कुछ दिनों के लिए युद्ध विराम है ताकि जीवन के लिए आवश्यक सामग्री की सहायता पहुंच सके परन्तु इसके बाद फिर क्या होगा, सहायता पहुंचा कर फिर मारेंगे उनको। इसराईल की सरकार के इरादे तो भयानक लगते हैं क्यूँकि उनकी सरकार के एक विशेष सलाहकार ने कल पर्सों यह घोषणा की है कि यदि इस युद्ध विराम के बाद फिर तुरन्त युद्ध शुरु नहीं किया गया तो मैं शासन से निकल जाऊँगा, इस प्रकार की तो इनकी सोचें हैं।

बड़ी शक्तियाँ प्रत्यक्षत: बातें तो करती हैं सहानुभूति की, किन्तु न्याय करना नहीं चाहतीं तथा इस समस्या के प्रति गम्भीर ही नहीं हैं। उनको यह पता नहीं, समझते हैं कि वहीं तक सीमित रहेगी, परन्तु जो बुद्धिजीवी हैं उनके, वे कहने भी लग गए हैं कि यह युद्ध केवल उन देशों तक सीमित नहीं रहेगी बल्कि बाहर भी फैलेगा तथा उनके देशों तक भी पहुंच जाएगा।

मुस्लिम शासन कुछ बोलना शुरु हुए हैं जिस तरह सऊदी बादशाह ने भी, सुना है, कहा है कि मुसलमानों की एक आवाज़ होनी चाहिए, तो एक आवाज़ बनाना पड़ेगी, इसके लिए ठोस प्रयास करने होंगे। उनको यदि यह आभास हुआ है तो अल्लाह तआला इस भावना को अमली रूप देने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अतएव दुआओं की ओर अधिक ध्यान दें।

ख़ुत्ब: के अन्तिम भाग में हुज़ूरे अनवर ने 5 मृतकों का सद्धर्णन किया तथा जनाज़े की नमाज़ $गायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। इनमें मुकर्रम अब्दुस्सलाम आरिफ़ साहब मुरब्बी सिलसिला, मुकर्रम मुहम्मद क़ासिम ख़ान साहब ऑफ़ कैनेडा, पूर्व नायब नाज़िर बैतुल माल ख़र्च। मुकर्रम अब्दुल करीम क़ुदसी साहब, आप जमाअत के विख्यात कवि थे। मियाँ रफ़ीक़ अहमद गोनदल साहब और मुकर्रमा नसीमा लईक़ साहिबा ऑफ़ अमरीका पतनी सय्यद लईक़ अहमद साहब माडल टाउन लाहौर शामिल हैं। हुज़ूरे अनवर ने समस्त मृतकों की मगफ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान- 18001032131

☆ ☆ ☆

## सर्दियों में खांसी ज़ुकाम से कैसे बचें

सर्दी का मौसम आ गया है। लोग तेज़ी से बीमार पड़ रहे हैं। अस्पतालों के मेडिसिन ओपीडी में सर्दी-ज़ुकाम, बुखार व खांसी के रोगियों की संख्या बढ़ गई है। तापमान में उतार- चढ़ाव होने से दमा के रोगियों की दिक्कतें भी बढ़ी हैं। सांस फूलने की समस्या ग्रसित रोगी प्रतिदिन बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं। डाक्टर जहां मरीजों का इलाज कर रहे हैं वहीं लोगों को बामारी से बचने के लिए सतर्कता बरतने की सलाह दे रहे हैं।

**बचाव कैसे करें:** 1. सुबह-शाम पर्याप्त गरम कपड़े पहनें। 2.गुनगुने गरम पानी का सेवन करें। 3.फ्रीज में रखे पानी या सामान का सेवन बिल्कुल न करें। 4.बाहर का कुछ न खाएं-पीएं। 5.धूल व गर्दे से बचकर रहें। 6.सुबह ठंड कम होने पर ही टहलने जाएं।

# वास्तविक इस्लामी ख़िलाफ़त

अनुवादक : फ़ज़ल नासिर मुरब्बी सिलसिला

**जीवन का उद्देश्य**

मनुष्यों में ऐसे लोगों को छोड़कर जो पशुओं की भांति केवल खाने-पीने तथा प्राकृतिक उत्तेजनाओं की पूर्ति में ही व्यस्त रहते हैं वे लोग जो चिंतन के अभ्यस्त हैं उनके निकट जीवन का क्या उद्देश्य है यह विषय हमेशा से चर्चा में रहा है परंतु ईश्वर के मार्गदर्शन के अभाव में ऐसे लोग कभी किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच पाते। यही कारण है कि किसी ने अपने जीवन का उद्देश्य कुछ निर्धारित किया तो किसी ने कुछ। लेकिन सत्य यह है कि मनुष्य के जीवन का क्या उद्देश्य है इसका निर्धारण वही कर सकता है जिसने मनुष्य को पैदा किया और क़ुरआन से पता चलता है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी भक्ति के लिए पैदा किया है जैसा कि वह फरमाता है-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۷﴾

और मैंने जिन्नों (बड़े लोगों) और (साधारण) मनुष्यों को इसलिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत करें।"

(सूरह ज़ारियात- 51:57)

इबादत से अभिप्राय केवल नमाज़ (पूजा पाठ) ही नहीं बल्कि अरबी भाषा में इस शब्द के बड़े विस्तृत अर्थ हैं। इबादत का मतलब है आज्ञा पालन करना, सेवा करना, संपूर्ण विनय, उपासना व किसी का चिन्ह ग्रहण करना उदाहरणत: कहते हैं कि طریق معبد अथवा مزلل अर्थात ऐसा मार्ग जो आगमन व प्रस्थान की बहुतायत से ऐसा हो गया हो कि पैरों के चिन्ह ग्रहण करने लग जाए अर्थात उस स्थान पर पद चिन्ह दिखाई देने लगें इत्यादि। अब देखो अल्लाह तआला की इबादत करने के कितने विस्तृत अर्थ हैं यदि मनुष्य इस एक बात को ही अपने भीतर पैदा कर ले कि अल्लाह या ईश्वर की छाप अपने व्यक्तित्व पर लगा ले जैसा कि स्वयं अल्लाह तआला फरमाता है-

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۖ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ

"अल्लाह का रंग पकड़ो और रंग में अल्लाह से श्रेष्ठ और कौन हो सकता है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं।" (अल बक़र: 139)

तो संसार से सारे उपद्रव ही समाप्त हो जाएंगे और जो समाज इस मूल बिंदु पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा तो यही वे लोग होंगे जिनको समस्त प्रकार की शांति प्राप्त होगी क्योंकि अल्लाह तआला जिसके अतिरिक्त और कोई ख़ुदा नहीं उसके अनेक गुण हैं वह अत्यंत दयालु है, किसी पर अत्याचार नहीं करता, सब का पालनहार है, बहुत क्षमा करने वाला, वह अहंकारियों और अत्याचारियों को पसंद नहीं करता और उन्हें दण्ड देने का सामर्थ्य रखता है इत्यादि और इसके अतिरिक्त भी अल्लाह तआला के अनेक गुण और विशेषताएं हैं और मनुष्य को अपनी इबादत का हुक्म देकर अल्लाह ताआला

का प्रयोजन यह है कि नमाज़ रोज़ा इत्यादि के साथ-साथ अपने-अपने दायरे में वे इन गुणों और विशेषताओं को ग्रहण करने का भी प्रयास करते रहें।

**धर्म का प्रकरण**

जीवन का उद्देश्य जो कि एक ख़ुदा की इबादत करना है, से मानवजाति को अवगत कराने के लिए ईश्वर ने धर्म का प्रकरण आरंभ किया। समाज शास्त्रियों का यह कथन गलत है जो कहते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को नहीं बल्कि मनुष्य ने ईश्वर को पैदा किया है इस तरह से कि आदि मानवों ने जब आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखा तो उनके साधारण मस्तिष्क उन वस्तुओं की तह तक न पहुंचने के कारण डरकर उनकी पूजा करने लगे और इस प्रकार अनेक ख़ुदाओं का विचार मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ अंत में एक ख़ुदा के ऊपर विश्वास पर आकर ठहर गया हालाँकि यह केवल एक धारणा ही है।

वैज्ञानिक दृष्टि से इस सिद्धांत का कोई सबूत नहीं मिलता और धर्म का इतिहास और प्राचीन ऑस्ट्रेलियाई aborigines में जो एक ख़ुदा का विश्वास पाया जाता है वह इस सिद्धांत के विपरीत है। धर्म का इतिहास हमें यही बताता है कि धर्म का आरंभ एक ख़ुदा पर विश्वास के साथ होता है और अनेकेश्वरवाद बाद में धर्म विशेष के पतन और मूल शिक्षाओं से भटक जाने के समय उत्पन्न होता है अत: मक्का वाले जो खुद को पैगंबर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के वंशज कहते थे पैगंबर मोहम्मद (स०अ०व०) के समय में बहुत से ख़ुदाओं की प्रतिमाओं को पूजते थे और साथ ही यह भी मानते थे की हज़रत इब्राहीम (अलै०) केवल एक ख़ुदा की ही इबादत किया करते थे। यही हाल ईसाइयों का है और अन्य धर्मों का भी यही हाल है। अत: जिस धर्म के संस्थापक का इतिहास जितने स्पष्ट रूप से सुरक्षित होगा उतनी ही स्पष्टता के साथ सिद्ध होगा कि उस धर्म का आरंभ एकेश्वरवाद के साथ हुआ और बाद में उनके अनुयायियों ने अपने समय की प्रचलित संस्कृति से प्रभावित होकर एक ख़ुदा के साथ-साथ अन्य ख़ुदाओं का विचार भी मिला लिया। रात और दिन के अदलने बदलने की तरह धर्म का उदय और पतन भी प्रकृति के नियमानुसार ही होता है।

समस्त धर्म मूल रूप से एक ही ईश्वर की ओर से प्रकट हुए और उनका उद्देश्य भी मूलत: एक ही था परंतु आरंभ में चूँकि मानव मस्तिष्क पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ था और न ही विभिन्न देशों का मेल मिलाप इतना गहन था बल्कि वे सामान्यत: एक प्रकार से अलग थलग रहते थे इसीलिए ईश्वर ने विभिन्न देशों में समय विशेष और क्षेत्र विशेष के लिए अलग-अलग पैगंबर या अवतार भेजे परंतु जैसे-जैसे व्यापार, परिवहन के संसाधनों के विकास एवं अन्य कारणों से दुनिया एक होने लगी और मानव मस्तिष्क भी पूर्ण रूप से विकसित हो गया तो अल्लाह तआला (ईश्वर) ने समस्त संसार के लिए एक धर्म निर्धारित किया जिसमें कयामत तक के लिए मानव की धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं के साधन मौजूद थे और वह धर्म इस्लाम है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है-

"आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण किया और अपना उपकार तुम पर पूरा किया और धर्म के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसंद किया।"

(सूरह आले इमरान)

**नबुव्वत (prophethood) के मार्ग पर ख़िलाफ़त की स्थापना**

जैसा कि प्रकृति का नियम है इस संसार में कोई अमर नहीं, जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अवश्य होती है और अल्लाह तआला के नबी भी इस नियम से बाहर नहीं। वे संसार में आते हैं और एकेश्वरवाद, सत्य तथा न्याय का बीज बोकर चले जाते हैं परन्तु इस बीज को एक विशाल वृक्ष बनने में समय लगता है। अतः इस कार्य के लिए ख़ुदा ऐसे लोगों का चयन करता है जो नबी के उद्देश्य को जो वास्तव में स्वयं ख़ुदा का ही उद्देश्य है पूरा करते हैं और ऐसे लोगों को खलीफ़ा कहा जाता है जिसका अर्थ है उत्तराधिकारी अर्थात नबी की मृत्यु के पश्चात उसका उत्तराधिकारी। खलीफ़ा को वह पवित्रता तो प्राप्त नहीं होती जो नबी को होती है परन्तु वह उन मोमिनो में सर्वश्रेष्ठ होता है इसीलिए तो अल्लाह तआला उसे चुन लेता है। यद्यपि उसका चुनाव मोमिनों की एक जमात ही करती है लेकिन इसके पीछे ख़ुदा का हाथ कार्यरत होता है और जिस प्रकार नबी को महान सुरक्षा प्रदान होती है अर्थात उसके समस्त कार्य सुरक्षित होते हैं वह कोई पाप और गलत कार्य नहीं करते इस प्रकार ख़लीफा को छोटी सुरक्षा प्रदान होती है अर्थात धर्म के मामलों में वह कोई ग़लती नहीं करते और कोई ऐसा कार्य नहीं करते जिससे धर्म पर संकट आ जाए। इस सम्बन्ध में यदि उनसे कभी कोई ग़लती भी हो जाए तो अल्लाह तआला उन्हें उस ग़लती पर कायम नहीं रहने देता और शीघ्र ही उनकी गलती का सुधार कर देता है। संक्षेप में कहें तो ख़लीफा नबी का प्रतिबिंब होते हैं जिनके द्वारा नबुव्वत का प्रकाश प्रज्वलित होता है। इस्लाम में ख़िलाफत के विषय को समझने के लिए पवित्र क़ुरआन की सूरह नूर आयत 56 का अध्ययन करना चाहिए। इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है अल्लाह ने तुम ईमान लाने वाले तथा उचित कार्य करने वालों से वादा किया है कि अवश्य वह उन्हें धरती पर ख़लीफा बनाएगा जैसा कि उनसे पहले लोगों को ख़लीफा बनाया था और जो धर्म उसने उनके लिए पसंद किया है वह उनके लिए उसे दृढ़ता से स्थापित कर देगा और उनके भय की अवस्था के पश्चात वह उसे शांति में परिवर्तित कर देगा। वह मेरी इबादत करेंगे और किसी चीज़ को मेरा सहभागी नहीं बनाएंगे और जो लोग इसके बाद भी इन्कार करेंगे वे उद्दडियों में शुमार किए जाएंगे। इसके बाद अगली आयात में अल्लाह तआला ने नमाज़ क़ायम करने, ज़कात देने और रसूल (आँहज़रत स०अ०व०) के आज्ञापालन का हुक्म दिया है। उपरोक्त आयात में सबसे पहला कार्य जो ख़िलाफत का बयान किया वह धर्म की मज़बूत बुनियादों पर स्थापना करना है फिर भय की अवस्था को शांति में बदलना और अल्लाह की इबादत करना और किसी भी चीज़ को उसका भागीदार न बनाना। इस परिपेक्ष्य में जब हम पैग़म्बर हज़रत

मुहम्मद मुस्तफ़ा (स०अ०व०) के बाद ख़िलाफत-ए-राशिदा जिसका काल हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से लेकर हज़रत अली (रज़ि०) तक फैला है, का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि ख़िलाफत का वास्तविक कार्य जिसका उल्लेख अल्लाह तआला ने सूरह नूर की उपरोक्त आयात में किया है बहुत सफलतापूर्वक अपने अंजाम को पहुँचा। इस्लाम के इतिहास से परिचय रखने वाले जानते हैं कि नबी (स०अ०व०) की मृत्यु के पश्चात अरब में कितना भयंकर विद्रोह फैल गया था। अधिकतर कवियों ने ज़कात देनी बंद कर दी, कुछ लोगों ने नबुव्वत का झूठा दावा करके इस्लाम के सिद्धांतों में परिवर्तन करना चाहा, बहुत से निर्दोष मुसलमानों की हत्या की, अनेक प्रकार के अत्याचार किए और बड़ी संख्या में लड़ाकों को लेकर मदीना पर चढ़ाई की। ऐसे नाज़ुक समय में रसूल के ख़लीफ़ा अबू बक्र (रज़ि०) का साहस ही था जिसने उन सब उपद्रवों का मुक़ाबला किया। अबू बक्र जैसे नरम दिल के मनुष्य में जो युद्ध का इतना अनुभव भी न रखते थे यह साहस कहाँ से आया निस्सन्देह इसका यही कारण है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के पीछे ख़ुदा का हाथ कार्य कर रहा था फिर जब इस्लाम के झन्डे के नीचे सारा अरब एकजुट होने लगा तो उस समय विश्व की दो महाशक्तियाँ रोम और फ़ारस मुसलमान के पीछे पड़ गईं और उन्होंने इस्लाम को मिटाने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा दिया लेकिन उन शक्तियों के मुकाबले में बहुत ही सीमित व नाममात्र संसाधनों के बावजूद अल्लाह तआला ने ख़िलाफत के माध्यम से प्रत्येक नाज़ुक अवसरों पर इस्लाम की रक्षा की और भय की हालत को शान्ति में बदल दिया और धर्म बहुत मज़बूत बुनियादों पर स्थापित हो गया और मानव जीवन का उद्देश्य जो कि एक ख़ुदा की इबादत करना है जिसका आरम्भ में वर्णन हो चुका है, अपने विस्तृत अर्थों के साथ उसके पालन करने का मार्ग सम्पूर्ण मानवजाति के लिए सरल हो गया क्योंकि ख़ुदा की पहचान ही है जो संसार में शान्ति का एकमात्र साधन है। यह ख़िलाफत तब तक स्थापित रही जब तक उसने अपने कर्तव्यों का पूरा न कर दिया।

उसके बाद सम्राटों का दौर आया उन्होंने बेशक हर प्रकार के संसारिक सुख प्राप्त किए परन्तु खुलफ़ा-ए-राशिदीन का युग हमेशा त्याग और बलिदान का ही था। दुनिया पर शासन करना उनका मक़सद न था। उनके समय में जो युद्ध हुए वे केवल आत्मरक्षा, अत्याचारियों के हाथ रोकने व आज़ादी क़ायम करने के लिए थे। हज़रत उमर (रज़ि०) के समय में मुसलमानों ने इतनी शक्ति प्राप्त कर ली थी कि यदि वे चाहते तो विजय के प्रकरण को वहीं पर बस न करते बल्कि आगे से आगे बढ़ते चले जाते परन्तु आप (रज़ि०) ने ऐसा न किया। इतिहास बताता है कि एक बार हज़रत उमर (रज़ि०) ने इच्छा व्यक्त की और फ़रमाया काश तुम्हारे और ईरानियों के मध्य बहुत विशाल और गहरी आग से भरी खाई हो, न वे तुम तक पहुँच सकें और न तुम उन तक परन्तु उस समय हालात ही ऐसे थे जिसके कारण निर्णय लिया गया कि यदि अतिरिक्त पेशकदमी न की गई तो बहुत सी समस्याऐं उत्पन्न हो जाएंगी तब न चाहते हुए ऐसा किया गया। इस सम्बन्ध में

हज़रत मसीह मौऊद (अलै०) का भी कथन है कि यदि रोम और फ़ारस के साम्राज्य अत्याचार न करते तो आज भी वे मौजूद होते। अत: ख़लीफ़ाओं ने देशों को अपने अधीन नहीं किया बल्कि लोगों के दिल जीते और आज तक उन देशों में जो इस्लाम मुख्य धर्म के रूप में मौजूद है इसका कारण बल प्रयोग या शक्ति नहीं बल्कि इस्लाम की शिक्षाओं का वह सौंदर्य है जिसने लोगों के दिलों को बन्धक बना लिया।

ख़िलाफत के समाप्त होने के बाद कुछ समय के लिए बेशक नबुव्वत का प्रकाश बुझ गया परन्तु जैसा कि ख़ुदा तआला का वादा था कि वह सदैव इस्लाम की रक्षा करेगा, अल्लाह तआला ने मुजद्दिदों और औलिया के माध्यम से छोटे-छोटे द्वीप प्रज्वलित करने आरम्भ किए जिन्होंने हर शताब्दी में ख़ुदा की ओर मार्गदर्शन करने में अपना योगदान दिया।

**नबुव्वत के मार्ग पर ख़िलाफ़त की पुन: स्थापना**

जैसा कि वर्णन हुआ दिन-रात के अदलने बदलने की भाँति पुण्य और पाप भी धरती पर अपना आधिपत्य स्थापित करते रहते हैं अत: जब मुसलमानों ने इस्लाम की शिक्षाओं पर अमल करना छोड़ दिया तो आहिस्ता आहिस्ता उनमें बिगाड़ पैदा होने लगा बेशक मुजद्दिदीन समय-समय पर मुसलमानों का सुधार भी करते रहे परन्तु जब चौदहवीं शताब्दी में महान उपद्रव और अंधकार फैल गया तो आँहज़रत (स०अ०व०) की भविष्यवाणियों के अनुसार एक महान सुधारक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी इमाम मेहदी व मसीह मौऊद (अलै०) का जन्म हुआ और जैसा कि हदीस में लिखा था आप (अलै०) के बाद एक बार फिर से नबुव्वत के मार्ग पर ख़िलाफत जारी हुई लेकिन इस बार यह ख़िलाफत राजनीतिक अधिकारों के बिना स्थापित हुई है जैसा कि स्वयं हज़रत मसीह मौऊद (अलै०) ने भी किसी राजनीतिक अधिकार के बग़ैर ही प्रकटन किया था। आप (अलै०) फ़रमाते हैं-

मुझको क्या मुल्कों से मेरा मुल्क है सबसे जुदा।
मुझको क्या ताजों से मेरा ताज है रिज़वान-ए-यार।।

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिय्या का कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं है केवल एक ही उद्देश्य है जिसका वर्णन सूरह नूर की उपरोक्त आयत में हो चुका है और वह यह है कि धर्म को मज़बूत बुनियादों पर स्थापित करना, भय को शान्ति में बदलकर सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करना और सम्पूर्ण मानवजाति के लिए उनके जीवन का जो उद्देश्य है अर्थात इबादत, उस लक्ष्य की पूर्ति का द्वार हमेशा के लिए खोल देना। और जब तक यह उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता इंशाअल्लाह उस समय तक ख़िलाफत-ए-अहमदिय्या अवश्य क़ायम रहेगी बल्कि हमारा तो पूर्ण विश्वास है कि खिलाफ़त अहमदिया क़यामत तक कायम-दायम रहेगी। इंशाअल्लाह

★ ★ ★

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

# SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

**AYURVEDIC PAIN BALM**
Prop: SK.HATEM ALI

**ALL INDIA AVAILABLE**

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

## RSB Traders & whole seller

Mob: 9647960851
9082768330

**Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items**

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

## INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
# 2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

## METRO PLASTIC PRODUCTS

# YUBA

## QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

*Fawad Anas Ahmed*

## GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

# अरबईन नम्बर-4

**संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से**

**अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य**

...ऐसा ही ख़ुदा के नबी दाऊद की ज़बूर में भी झूठे नबियों को तबाह किए जाने के बारे में बहुत वर्णन मिलता है तथा बाइबल की दूसरी किताबों में भी है, परन्तु मैं जानता हूँ कि क्रियात्मक तौर पर इतना लिखना ही पर्याप्त है क्योंकि यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि नबी होने का झूठा दावा करने वाला कारख़ाना-ए-नुबुव्वत का शत्रु और प्रकाश में अंधकार मिलाना चाहता है और लोगों के लिए जान-बूझ कर विनाश का मार्ग तैयार करता है। इसलिए ख़ुदा उसका शत्रु है तथा ख़ुदा की नीति और दया हज़ारों लोगों के मरने के बारे में उसकी मृत्यु को आसान जानती है। अत: जैसा कि समस्त दरिन्दों और हानि पहुँचने वालों के लिए ख़ुदा से मृत्यु दण्ड है और ऐसा ही उसके संबंध में आदेश है परन्तु सच्चे की ख़ुदा स्वयं रक्षा करता है तथा वह सच्चे के लिए सुरक्षित क़िला है तथा सच्चा उसकी गोद में सुरक्षित है जिस प्रकार कि शेरनी का बच्चा उसके पंजे की शरण में होता है। यही कारण है कि यदि कोई क़सम खाकर यह कहे कि अमुक ख़ुदा का मामूर झूठा है और ख़ुदा पर झूठ बांधता है और दज्जाल है, बेईमान है। हालांकि वास्तव में वह व्यक्ति ख़ुदा की ओर से तथा सच्चा हो और यह व्यक्ति जो उसे झुठलाता है फैसले के आधार पर ठहराए कि ख़ुदा के समक्ष दुआ करे कि यदि यह सच्चा है तो मैं पहले मरूँ और यदि झूठा है तो मेरे जीवन में यह व्यक्ति मर जाए तो ख़ुदा तआला अवश्य उस व्यक्ति को तबाह कर देता है जो इस प्रकार का फ़ैसला चाहता है। हम लिख चुके हैं कि (जंगे) बद्र के स्थान पर अबू जहल ने भी यही दुआ की थी। आंहज़रत का नाम लेकर कहा था कि हम दोनों में से जो झूठा है ख़ुदा इसी रणभूमि में उसका वध करे। अत: इस दुआ के पश्चात् वह स्वयं ही मारा गया। यही दुआ मौलवी इस्माईल अलीगढ़ वाले ने तथा मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने मेरे मुक़ाबले पर की थी जिसके हज़ारों लोग साक्षी हैं। तत्पश्चात् वे दोनों मौलवी लोग मर गए। नज़ीर हुसैन देहलवी जो महद्दिस कहलाता है मैंने बहुत ज़ोर दिया था कि वह इसी दुआ के साथ फ़ैसला करे परन्तु वह डर गया और भाग गया। उस दिन देहली की शाही मस्जिद में लगभग सात हज़ार के लगभग लोग रहे होंगे जब कि उसने इन्कार किया। इसी कारण अब तक जीवित रहा। अब हम इस पत्रिका को समाप्त करते हैं और हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब और उनके सहपंथियों से उत्तर के प्रतीक्षक हैं।[1]★

---

[1]★ इस बात को लगभग नौ वर्ष का समय व्यतीत हो गया कि जब मैं देहली गया था और मियां नज़ीर हुसैन ग़ैर-मुक़ल्लद को इस्लाम धर्म का निमन्त्रण दिया गया था तब उन का हर पहलू से उपेक्षा तथा उनकी गाली-गलौज देखकर अन्तिम निर्णय यही लिया गया था कि वह अपनी आस्था के सत्य होने की क़सम खोले फिर क़सम

# सूचना

मैंने अपना यह इरादा प्रकट किया था कि इस पत्रिका अरबईन के चालीस विज्ञापन अलग-अलग प्रकाशित करूँ और मेरा विचार था कि मैं केवल एक-एक पृष्ठ का विज्ञापन या कभी डेढ़ पृष्ठ या अधिक से अधिक दो पृष्ठ का विज्ञापन प्रकाशित करूँगा और या कभी तीन या चार पृष्ठ लिखने का संयोग हो जाएगा, परन्तु ऐसे संयोग सामने आ गए कि इसके विपरीत हुआ तथा नं. 2 और 3 और 4 पत्रिकाओं की भांति हो गए। अत: इस पुस्तक की नौबत सत्तर पृष्ठों तक पहुंच गई और वास्तव में वह बात पूरी हो चुकी जिसका मैंने इरादा किया था। इसलिए मैंने इन पत्रिकाओं को केवल चार नम्बर तक समाप्त कर दिया और भविष्य में प्रकाशित न होगी। जिस प्रकार हमारे प्रतापी और तेजस्वी ख़ुदा ने प्रथम पचास नमाज़ें फ़र्ज़ कीं कि फिर कम करके पांच को पचास के स्थान पर ठहरा दिया। इसी प्रकार मैं भी अपने कृपालु रब्ब की सुन्नत पर पाठकों के लिए सर दर्द को हल्का करके नम्बर चार को चालीस नं. के स्थान पर ठहरा देता हूँ और अपने इस लेख को अपनी जमाअत के लिए कुछ नसीहतों पर समाप्त करता हूँ।

# सदुपदेश

हे प्रिय सज्जनो ! तुम ने वह समय पाया है जिसकी ख़ुशख़बरी समस्त नबियों ने दी है और उस व्यक्ति को अर्थात् मसीह मौऊद को तुम ने देख लिया जिसे देखने के लिए बहुत से पैग़म्बरों ने भी इच्छा की थी। इसलिए अब अपने ईमानों को खूब मज़बूत करो और अपने मार्ग ठीक करो, अपने हृदयों को शुद्ध करो, अपने स्वामी को प्रसन्न करो। मित्रो !! तुम इस जगत सराय में केवल कुछ दिनों के लिए हो। अपने असली घरों को स्मरण करो। तुम देखते हो कि प्रति वर्ष कोई न कोई मित्र तुम से विदाई लेता है। इसी प्रकार तुम भी किसी वर्ष अपने मित्रों को जुदाई का दाग़ दे जाओगे। अत: सावधान हो जाओ और इस अंधकारमय युग का विष तुम पर प्रभाव न डाले, अपनी नैतिक अवस्थाओं को खूब शुद्ध करो, द्वेष, जलन और अभिमान से पवित्र हो जाओ, नैतिक चमत्कारों को संसार के समक्ष प्रदर्शन करो। तुम सुन चुके हो कि हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के दो नाम हैं। (1) एक मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और यह नाम तौरात में लिखा गया है जो एक शरीअत है जैसा कि इस आयत से प्रकट होता है-

---

के पश्चात् एक वर्ष तक मेरे जीवन में न मरा तो मैं अपनी समस्त किताबें जला दूंगा और उसे नऊज़ुबिल्लाह सत्य पर समझ लूंगा, परन्तु वह पलायन कर गया। इसी भागने की बरकत से उसे अब तक आयु दी गई। इसी से

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ

(अलफ़तह : 30)

(2) दूसरा नाम अहमद है (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और यह नाम इंजील में है जो एक सौम्य रूप में ख़ुदाई शिक्षा है। जैसा कि इस आयत से स्पष्ट होता है-

وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّأْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ

(अस्सफ़ : 7)

और हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) प्रताप और सौन्दर्य दोनों के संग्रहीता थे। मक्का का जीवन जमाली रंग में था तथा मदीना का जीवन जलाली (प्रतापी) रंग में फिर ये दोनों विशेषताएं उम्मत के लिए इस प्रकार से बांटी गईं कि[रज़ि] को जलाली रंग का जीवन प्रदान किया गया और जमाली रंग के जीवन के लिए मसीह मौऊद को आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मज़हर ठहराया। यही कारण है कि उसके बारे में फ़रमाया गया कि يَضَعُ الْحَرْب अर्थात्[2] ★ लड़ाई नहीं करेगा और यह ख़ुदा तआला का क़ुर्आन करीम में वादा था कि इस भाग को पूरा करन के लिए मसीह मौऊद और उसकी जमाअत को प्रकट किया जाएगा। जैसा कि आयत اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुम्अ : 4) में इसी की ओर संकेत है और आयत تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا (मुहम्मद : 5) भी यही संकेत कर रही है। अत: सावधान होकर सुनो कि तेरह सौ वर्ष के पश्चात् जमाली रंग के जीवन का नमूना दिखाने के लिए तुम्हें पैदा किया गया।*[3] यह ख़ुदा की परीक्षा है।

---

★ जिहाद अर्थात् धार्मिक लड़ाइयों की तीव्रता को ख़ुदा तआला शनै: शनै: कम करता गया है। हज़रत मूसा के समय इतनी कठोरता थी कि ईमान लाना भी क़त्ल से बचा नहीं सकता था तथा दूध पीते बच्चे भी क़त्ल किए जाते थे फिर हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के समय में बच्चों, बूढ़ों तथा स्त्रियों का क़त्ल अवैध किया गया और फिर कुछ जातियों के लिए ईमान की बजाए केवल ज़िज़िया (कर) दे कर गिरफ़्त से मुक्ति पाना स्वीकार किया गया। फिर मसीह मौऊद के समय जिहाद का आदेश बिल्कुल स्थगित कर दिया गया। इसी से।

3* ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान भी जमाली रंग में सम्मिलित हैं और क़ुर्आन करीम की आयत لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़फ़ : 10) में वादा था कि ये ज्ञान तथा अध्यात्म ज्ञान मसीह मौऊद को पूर्ण रूपेण दिए जाएंगे क्योंकि समस्त धर्मों पर विजयी होने का माध्यम ख़ुदाई ज्ञान सच्चे अध्यात्म ज्ञान, स्पष्ट तर्क तथा प्रभुत्वशाली निशान हैं तथा धर्म का प्रभुत्व उन्हीं पर निर्भर है। इसी की ओर संकेत है कि जो कहा गया कि उन दिनों में बैतुल्लाह के नीचे एक बड़ा ख़ज़ाना निकलेगा अर्थात् बैतुल्लाह के लिए जो ख़ुदा का स्वाभिमान है वह मांग

वह तुम्हें परखता है कि तुम उस नमूने को दिखाने में कैसे हो। तुम से पूर्व सहाबा[रज़ि.] ने जलाली (प्रतापी) जीवन का प्रशंसनीय नमूना दिखाया और वह ऐसा ही समय था कि जलाली (प्रतापी रंग के जीवन का नमूना दिखाया जाता, क्योंकि ईमानदार लोग मूर्तियों के सम्मान के लिए तथा सृष्टि-पूजा के समर्थन में भेड़-बकरी के समान क़त्ल किए जाते थे, तथा पत्थरों, सितारों, तत्वों तथा दूसरी सृष्टि को ख़ुदा का स्थान दिया था। अत: वह युग नि:संदेह जिहाद का युग था ताकि जो लोग अत्याचार एवं अन्याय से तलवार उठाते हैं वे तलवार ही से क़त्ल किए जाएं। अत: सहाबा[रज़ि.] ने तलवार उठाने वालों को तलवार ही से ख़ामोश किया और मुहम्मद का नाम जो अपने अन्दर प्रताप, तेज और प्रियतम की शान रखता है उसकी झलक प्रकट करने के लिए ख़ूब पराक्रम दिखाए तथा धर्म के समर्थन में अपने रक्त बहा दिए। तत्पश्चात् वह महा झूठे पैदा हुए जो मुहम्मद के नाम पर प्रताप प्रकट करने वाले नहीं थे वरन् उनके अधिकतर लोग चोरों और डाकुओं की भांति थे, जो मुझ से पूर्व गुज़र गए तथा झूठे तौर पर मुहम्मदी कहलाते थे और लोग उनको स्वार्थी समझते थे जैसा कि आजकल भी कुछ सीमावर्ती मूर्ख इस प्रकार के मौलवियों की शिक्षा से धोखा खा कर मुहम्मदी प्रताप के प्रकट करने के बहाने से लूट-मार अपना नियम बनाते हैं और प्रतिदिन अकारण के ख़ून करते हैं परन्तु तुम ध्यानपूर्वक सुन लो कि अब मुहम्मद नाम की झलक दिखाने का समय नहीं अर्थात् अब जलाली रंग की कोई सेवा शेष नहीं क्योंकि उचित सीमा तक वह जलाल प्रकट हो चुका। सूर्य की किरणों की अब बर्दाश्त नहीं। अब चन्द्रमा के शीतल प्रकाश की आवश्यकता है और वह अहमद के रंग में होकर मैं हूँ। अब अहमद के नाम का नमूना प्रकट करने का समय है

---

करेगा कि बैतुल्लाह से अध्यात्मिक ज्ञान और आकाशीय ख़ज़ाने प्रकट हों अर्थात् जब विरोधियों के अत्याचारपूर्ण आक्रमण बैतुल्लाह के सम्मान को ध्वस्त करना चाहेंगे तो उसका परिणाम यह होगा कि उसके नीचे से एक भारी ख़ज़ाना निकल आएगा जो अध्यात्म ज्ञानों का ख़ज़ाना होगा और यह बैतुल्लाह पर निर्भर नहीं अपितु क़ुर्आन के प्रत्येक ऐसे वाक्य के नीचे एक ख़ज़ाना है जिसे काफ़िरों के हाथ विरोधात्मक आक्रमण से ध्वस्त करके झूठे तौर पर दिखाना चाहते हैं। कोई मुसलमान न बैतुल्लाह को गिराएगा और न क़ुर्आनी इमारत को गिराना चाहेगा अपितु हदीस के विषय के अनुसार काफ़िर लोग उस इमारत को गिरा रहे हैं और उसके नीचे से ख़ज़ाने निकल रहे हैं। मैं काफ़िर को भी इस कारण मित्र रखता हूँ कि उनके माध्यम से बैतुल्लाह तथा किताबुल्लाह के गुप्त ख़ज़ाने हमें मिल रहे हैं तथा इन अर्थों को स्थापित रखकर यहां एक और अर्थ भी हैं और वह ये हैं कि ख़ुदा ने अपने इल्हामों में मेरा नाम बैतुल्लाह भी रखा है। यह इस बात की ओर संकेत है कि विरोधीजन इस बैतुल्लाह को जितना गिराना चाहेंगे उसमें से अध्यात्म ज्ञान तथा आकाशीय निशानों के ख़जाने निकलेंगे। अत: मैं देखता हूँ कि प्रत्येक कष्ट के समय एक ख़ज़ाना अवश्य निकलता है तथा इस बारे में इल्हाम यह है-

यके पाए मन मी बोसीद व मन मे गुफ़्तम कि हजरे अस्वद मिनम। इसी से

अर्थात् जमाली रंग की सेवाओं के दिन हैं तथा नैतिक कौशलों के प्रकट करने का युग है। हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मूसा के मसील थे और मसीले ईसा भी। मूसा जलाली रंग में आया था तथा उस पर जलाल और ख़ुदाई प्रकोप के रंग का प्रभुत्व था परन्तु ईसा जमाली रंग में आया था और उस पर विनय का प्रभुत्व था। अत: हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने मक्का और मदीना के जीवन में ये दोनों नमूने जलाल और जमाल के प्रकट कर दिए और फिर चाहा कि आप[स.] के पश्चात् आपकी वरदान प्राप्त जमाअत भी जो आपकी अध्यात्मिक उत्तराधिकारी है उन्हीं दोनों नमूनों को प्रकट करे। अत: आप[स.] ने मुहम्मदी अर्थात् जलाली नमूना दिखाने के लिए सहाबा[रज़ि.] को नियुक्त किया, क्योंकि उस युग में इस्लाम की पीड़ित अवस्था के लिए यही उपचार नीतिगत था। फिर जब वह युग जाता रहा और पृथ्वी पर कोई व्यक्ति ऐसा न रहा कि धर्म के लिए इस्लाम पर ज़बरदस्ती करे। इसलिए ख़ुदा ने जलाली रंग को निरस्त करके अहमद नाम का नमूना प्रकट करना चाहा अर्थात् जमाली रंग दिखाना चाहा। अत: उसने अनादि वादे के अनुसार अपने मसीह मौऊद को पैदा किया जो ईसा का अवतार और अहमदी रंग में होकर जमाली शिष्टाचार का प्रकट करने वाला है और ख़ुदा ने तुम्हें इस अहमद की विशेषता रखने वाले ईसा के लिए बतौर अंगों के बनाया। अत: अब समय है कि अपनी नैतिक शक्तियों का सौन्दर्य और सौम्यता दिखाओ। चाहिए कि तुम में ख़ुदा की सृष्टि के लिए सामान्य सहानुभूति हो और कोई छल-कपट तुम्हारे स्वभाव में न हो तुम अहमद नाम के मज़हर हो। अत: चाहिए कि दिन-रात ख़ुदा की स्तुति और प्रशंसा तुम्हारा कार्य हो और सेवकों के समान अवस्था जो प्रशंसक होने के लिए अनिवार्य है अपने अन्दर पैदा करो और तुम पूर्ण रूप से ख़ुदा की प्रशंसा किस प्रकार कर सकते हो जब तक तुम उसे समस्त लोकों का प्रतिपालक अर्थात् समस्त संसार का पालने वाला न समझो और तुम क्योंकर इस इक़रार में सच्चे ठहर सकते हो जब तक स्वयं को ऐसा ही न बनाओ, क्योंकि यदि तू किसी सद्गुण व्यक्ति के साथ किसी की प्रशंसा करता है और स्वयं उस गुण के विपरीत आस्था और आचरण रखता है तो जैसे तू उस व्यक्ति से उपहास करता है कि जो स्वयं के लिए पसन्द नहीं करता उसके लिए वैध रखता है और जबकि तुम्हारा रब्ब जिस ने अपने कलाम को शब्द रब्बुल आलमीन (सब लोकों को प्रतिपालक) से आरम्भ किया है पृथ्वी की समस्त खाने और पीने योग्य वस्तुएं और अन्तरिक्ष की समस्त वायु, आकाश के सितारों, अपने सूर्य और चन्द्रमा से समस्त अच्छे और बुरे को लाभ पहुँचाता है तो तुम्हारा कर्त्तव्य होना चाहिए कि यही सदाचार तुम में भी हो अन्यथा तुम अहमद और हामिद (प्रशंसक) नहीं कहला सकते, क्योंकि अहमद तो उसे कहते हैं जो ख़ुदा की प्रशंसा करने वाला हो और जो व्यक्ति किसी की बहुत प्रशंसा करता है वह अपने लिए वही सदाचार पसन्द करता है जो उसमें हैं और चाहता है कि वे सदाचार उस में हों।

अत: तुम सच्चे अहमद या हामिद कैसे हो सकते हो जबकि इस सदाचार को अपने लिए पसन्द नहीं करते। वास्तव में अहमदी बन जाओ और निश्चय ही समझो कि ख़ुदा की मूल नैतिक विशेषताएं चार ही हैं जिनका सूरह फ़ातिहा में उल्लेख है

(1) सब का प्रतिपालक (रब्बुल आलमीन)

(2) रहमान- किसी की सेवा के बदले के बिना कृपा करने वाला

(3) रहीम- किसी सेवा पर हक़ से अधिक ईनाम और सम्मान देने वाला और सेवा को स्वीकार करने वाला और नष्ट न करने वाला।

(4) अपने बन्दों की अदालत करने वाला। अत: अहमद वह है जो इन चारों विशेषताओं को प्रतिबिम्ब स्वरूप अपने अन्दर एकत्र कर ले। यही कारण है कि अहमद का नाम सौम्यता को प्रकट करने वाला तथा इसके मुक़ाबले पर मुहम्मद का नाम जलाल (प्रताप एवं तेज) का प्रकट करने वाला है। कारण यह है कि मुहम्मद के नाम में प्रियतम होने का रहस्य है क्योंकि कीर्तियों का संग्रहीता है तथा पूर्ण स्तर की सौम्यता तथा कीर्तियों का संग्रहीता होना जलाल (प्रताप) को चाहता है परन्तु अहमद नाम में प्रेमी का रहस्य है क्योंकि प्रशंसक होने के लिए विनय और प्रेमरूपी विनम्रता और ख़ाकसारी अनिवार्य है। इसी का नाम जमाली (सौम्य) अवस्था है। यह अवस्था विनम्रता को चाहती है। हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में प्रियतम होने की शान भी थी जिसकी मुहम्मद नाम मांग करता है क्योंकि मुहम्मद होना अर्थात् सम्पूर्ण कीर्तियों एवं गुण समूहों का संग्रहीता होना प्रियतम होने की शान पैदा करता है और आप[स.] में प्रेमी की शान भी थी जिसकी अहमद का नाम मांग करता है क्योंकि प्रशंसक के लिए प्रेमी होना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति किसी की सच्ची और पूर्ण प्रशंसा तभी करता है जब कि उसका प्रेमी हो और आशिक़ और प्रेमी होने के लिए विनम्रता अनिवार्य है और यही जमाली अवस्था है जो अहमदियत की वास्तविकता के लिए अनिवार्य है। प्रियतमता जो मुहम्मद के नाम में गुप्त थी, सहाबा के द्वारा प्रकट हुई और जो लोग अपमान करने वाले और गर्दन काटने वाले थे ख़ुदा के प्रिय होने के प्रताप (जलाल) ने उनका दमन किया परन्तु अहमद नाम में प्रेमी होने की शान थी अर्थात् प्रेमियों जैसी विनय और ख़ाकसारी। यह शान मसीह मौऊद के द्वारा प्रकट हुई। अत: तुम अहमदियत की शान के प्रकट करने वाले हो, इसलिए अपनी प्रत्येक अनुचित उत्तेजना पर मौत ले आओ तथा प्रेमियों के समान विनम्रता दिखाओ। ख़ुदा तुम्हारे साथ हो आमीन।

★ ★ ★

## ए ख़ुदा लाज रखना....

पुख्ता ईमान है कदम बच जाएं डगमगाने से
ए ख़ुदा लाज रख लेना मेरी इस ज़माने से
गफलतों में गुज़ारी है एक उमर हमने
अब मिला ईमान तो डर लगता है खोने से
ख़ुदा ने बख्शी है हिदायत फ़क़त अपने फज़ल से
कहां मिला है मसीह लोगों को रोने से
बस कदम रखना साबित जब तक है ज़िंदगी
फिर नहीं कोई डर तेरी गोद में सोने से
तेरी रहमत का साया न हो शामिल तो कुछ नहीं
गुनाह कहां धुलते हैं सिर्फ पानी के धोने से
साफ दिल और सच्चा किरदार भी लाज़िम है
कुछ नहीं होता सिर्फ इंसां के बड़ा होने से
(युसुफ अली सागर हिमाचली)

## नासमझ इंसान ....

दुनिया में इंसान ने क्या क्या नहीं समझा
बस इंसान ने इंसान को इंसान नहीं समझा
दुनियादारी और रिश्तों को अच्छी तरह समझा
बस समझा नहीं तो कभी ईमान नहीं समझा
किस्से कहानियां और किताबों को समझा
बस समझा नहीं तो कभी क़ुरआं नहीं समझा
लगा रहा हर चीज़ को हासिल करने की चाह में
बस कब्रिस्तान नहीं समझा शमशान नहीं समझा
हर राग हर धुन हर संगीत को समझा
बस समझा नहीं तो कभी अज़ान नहीं समझा
जीवन के हर पल में मस्तमौला ही रहा
बस समझा नहीं तो कभी अंजाम नहीं समझा
(यूसुफ अली सागर, हिमाचली

## एक कब्र की पुकार ...

ए गुज़रने वाले कुछ एहतराम तो कर
जल्दी में क्यों है थोड़ा आराम तो कर

तू क्या था क्या है सब हो जायेगा ज़ाहिर
थोड़ा खुद को सरेआम तो कर

ये जिस्म मिट्टी का पुतला ही है
आ देख, बैठ, क़याम तो कर

कीड़ों ने खा लिया वो जिस पे गुरूर था
मैं हाल करूं बयां तू कलाम तो कर

मैं भी कभी तेरे जैसा ही था
कभी आ मेरे पास सलाम तो कर

ये दुनिया की मोहब्बत एक धोखा ही है
मेरे महबूब की मोहब्बत का एक जाम तो भर

(युसुफअलीसागर, हिमाचली)

★ ★ ★

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

## सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

**अनुवादक:** सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

*** ग़ैर अहमदी मुसलमान आरोप लगाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद लिखा है कि जिसने मेरी सारी पुस्तकें तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। क्या सब अहमदियों ने ये पुस्तकें तीन दफ़ा पढ़ी हैं?**

*** ख़ुतबा जुमा के आख़िर पर इमाम नीचे बैठता है और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया पढ़ता है, वो ऐसा क्यों करता है?**

*** एक जमाअती ओहदेदार की अहमदी लड़कियों को ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम मर्दों से शादी की इजाज़त मिलने पर फ़िक्रमंदी और परेशानी के इज़हार पर हुज़ूर अनवर की हिदायत और राह-नुमाई**

*** कोरोना वायरस के लिए जो आजकल टीका आया हुआ है क्या वह हमें लगवाना चाहिए या नहीं?**

*** हुज़ूर इतने सारे काम इकट्ठे किस तरह कर लेते हैं?**

*** हुज़ूर अपने ख़ुतबात जुमा की तैयारी किस तरह करते हैं?**

*** क्या अल्लाह तआला पहले से जानता है कि हम जन्नत में जाऐंगे या दोज़ख़ में, और अगर वह जानता है तो फिर हमारी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है?**

*** कोरोना वायरस के ख़त्म होने के बाद दुनिया फिर से वैसे ही नॉर्मल हो सकती है जैसे पहले थी?**

**प्रश्न** : एक महिला ने अपनी बच्ची की जन्म से पूर्व वफ़ात पर कुछ सवालात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में जानने के उद्देश्य से तहरीर किए। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 20 फ़रवरी 2020 में इन सवालात के निमंलिखित जवाबात इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर ने फ़रमाया :

**उत्तर** : जो बच्ची पैदाइश से पहले फ़ौत हो गई है इस की तस्वीर घर में लगा कर अपने आपको मज़ीद तकलीफ़ देने वाली बात है। और वैसे भी चूँकि वह बच्ची पैदा होने से पहले फ़ौत हो गई थी इसलिए हो सकता है कि उसकी तस्वीर इतनी साफ़ न हो और दूसरे बच्चों को ख़ौफ़ज़दा करने का बायस हो। इसलिए इस बच्ची की तस्वीर घर में लगाने और अपने पास रखने की ज़रूरत नहीं।

पैदाइश से पहले फ़ौत होने वाले बच्चों को उमूमन न ग़ुसल दिया जाता है और न उनका जनाज़ा होता है लेकिन अगर कोई माता पिता अपनी दिल की संतुष्टि के लिए ऐसा कर लें तो इस में हर्ज भी कोई नहीं। जहां तक रोज़ाना क़ब्रिस्तान जाने की बात है तो अगर आप बच्ची की क़ब्र पर जा कर सब्र कर सकती हैं और आपके रोज़ाना क़ब्रिस्तान जाने में आप और बाक़ी घर वालों को कोई तकलीफ़ नहीं होती तो कुछ दिन रोज़ाना क़ब्रिस्तान जा कर दुआ करने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन अगर वहां जाने से आपकी तबीयत पर बुरा असर पड़ता हो और सब्र का दामन हाथ से छूटता हो तो फिर रोज़ाना क़ब्रिस्तान जाने की बजाय घर में

ही रह कर दुआ करें। और याद रखें कि ये बच्ची दरअसल आपके पास अल्लाह तआला की एक अमानत थी जो उसने आपको इतने ही वक़्त के लिए अता फ़रमाई थी और जब यह वक़्त ख़त्म हुआ तो उसने अपनी अमानत वापस ले ली। इसलिए उसे अल्लाह तआला की रज़ा समझ कर आपको इस पर सब्र करना चाहिए।

**प्रश्न** : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि ग़ैर अहमदी मुसलमान जिन में मेरे ख़ानदान वाले भी शामिल हैं आरोप लगाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद लिखा है कि जिसने मेरी सारी कुतुब तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। और फिर वे पूछते हैं कि क्या सब अहमदियों ने ये कुतुब तीन दफ़ा पढ़ी हैं? इस का क्या जवाब दिया जाए? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने दिनांक 20 फ़रवरी 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

**उत्तर** : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहीं यह नहीं लिखा कि जिसने मेरी सारी कुतुब तीन दफ़ा नहीं पढ़ीं उसे मेरे दावा की समझ नहीं है। बल्कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया है कि "और वे जो ख़ुदा के मामूर और मुर्सल की बातों को ग़ौर से नहीं सुनता और उसकी तहरीरों को ग़ौर से नहीं पढ़ता उसने भी तकब्बुर से एक हिस्सा लिया है। सो कोशिश करो कि कोई हिस्सा तकब्बुर का तुम में न हो ताकि हलाक न हो जाओ और ता तुम अपने अहल-ओ-अयाल समेत नजात पाओ।"

(नुज़ूलुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 403)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इस इरशाद का मतलब है कि जिन लोगों की दुनियावी कुतुब और उलूम की तरफ़ तवज्जा रहती है और दीनी कुतुब और उलूम की तरफ़ तवज्जा नहीं करते उनमें एक तरह का तकब्बुर पाया जाता है क्योंकि वे दुनियावी उलूम को ही काफ़ी समझते हैं हालाँकि इन्सान की नजात के लिए दीनी उलूम का हासिल करना निहायत ज़रूरी है। और दीनी इलम दीनी कुतुब के पढ़ने से ही हासिल होता है।

एक जगह हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी तसनीफ़ हकीकतुल वह्यी के बारे में ताकीद करते हुए फ़रमाया : "हमारे दोस्तों को चाहिए कि हकीकतुल वह्यी को अव्वल से आख़िर तक ग़ौर से पढ़ें बल्कि इसको याद कर लें। कोई मौलवी उनके सामने नहीं ठहर सकेगा क्योंकि हर किस्म के ज़रूरी बातों का इस में वर्णन किया गया है और ऐतराज़ों के जवाब दिए गए हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 235 ऐडीशन 1988 ई.)

तो अगर यह बात दुरुस्त होती कि जो शख़्स हुज़ूर अलैहिस्सलाम की समस्त पुस्तकों को तीन तीन मर्तबा नहीं पढ़ता उसे दावा की समझ नहीं आ सकती तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम हकीकतुल वह्यी के बारे में एक दफ़ा ग़ौर से पढ़ने की ताकीद न फ़रमाते बल्कि फ़रमाते कि उसे भी बाक़ी कुतुब की तरह तीन तीन दफ़ा पढ़ें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ख़ुद ऐसा कहीं नहीं तहरीर फ़रमाया जबकि सीरतुल महदी में एक रिवायत है कि "हज़रत साहिब फ़रमाया करते थे कि जो शख़्स हमारी किताबों को कम-अज़-कम तीन दफ़ा नहीं पढ़ता उस में एक किस्म का तकब्बुर पाया जाता है।" (सीरतुल महदी भाग प्रथम पृष्ठ 365 रिवायत नंबर 410)

और इस रिवायत का भी वही मतलब है जो ऊपर मैंने वर्णन कर दिया है कि दीनी कुतुब को छोड़

कर सिर्फ दुनियावी कुतुब पढ़ना और दीनी उलूम को छोड़कर सिर्फ दुनियावी उलूम हासिल करना इन्सान में तकब्बुर के पाए जाने की अक्कासी करता है। अत: हर अहमदी को ज़्यादा से ज़्यादा उन रुहानी ख़ज़ायन से लाभ प्राप्त करना चाहिए।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से दरयाफ़त किया कि ख़ुतबा जुमा के आख़िर पर इमाम नीचे बैठता है और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया पढ़ता है, वह ऐसा क्यों करता है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 23 फ़रवरी 2020 में इस मसला के बारे में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : यह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। इसलिए अहादीस की किताबों में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाने का यह तरीक़ वर्णन हुआ है कि आप पहले खड़े हो कर ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया करते थे और जब वाज़-ओ-नसीहत इत्यादि से फ़ारिग़ होते तो कुछ क्षणों के लिए ख़ामोशी से नीचे बैठ जाते और फिर उठकर ख़ुतबा सानिया इरशाद फ़रमाते। इस की वजह जैसा कि कुछ उलमा ने लिखा है शायद यह है कि इस के ज़रीया दोनों ख़ुत्बों में अंतर स्पष्ट किया जा सके।

लेकिन इसके साथ यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अगर कोई इमाम किसी तकलीफ़ की वजह से बैठ ने सके तो वह पहला ख़ुतबा देकर चंद लम्हे ख़ामोशी से खड़े रह कर ख़ुतबा सानिया पढ़ सकता है। जैसा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह  तआला किया करते थे, जब आप घोड़े से गिरने की वजह से नीचे बैठ नहीं सकते थे। उस वक़्त आप पहला ख़ुतबा इरशाद फ़रमाने के बाद कुछ क्षणों के लिए ख़ामोशी से खड़े रहते और फिर ख़ुतबा सानिया पढ़ा करते थे। इसी तरह जब मेरा पित्ते का ऑप्रेशन हुआ था तो उस के बाद जो पहला जुमा आया था उस के ख़ुत्बे के दौरान मैंने भी यही तरीक़ अपनाया था कि चंद लम्हे ख़ामोशी से खड़े रह कर ख़ुतबा सानिया पढ़ा।

प्रश्न : एक जमाअती ओहदेदार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहुताला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अहमदी लड़कियों को ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम मर्दों से शादी की इजाज़त मिलने पर फ़िक्रमंदी और परेशानी का इज़हार करके इस बारे में राहनुमाई चाही? जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 29 फ़रवरी 2020 में इस बारे में निमंलिखित हिदायात से नवाज़ा। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस्लाम के कुछ अहकामात इंतेज़ामी नौईयत के हैं जिनमें ख़ुदा तआला ने मुसलमानो को किसी किस्म की तबदीली का हक़ नहीं दिया लेकिन अपने नबी और इस की नियाबत में खलीफ़ा को उनमें तबदीली करने और हालात के मुताबिक़ फ़ैसला करने का इख़तेयार दिया है।

मेरे नज़दीक मुसलमान मर्द और औरत का ग़ैर मुस्लिमों के साथ निकाह का मामला भी इसी किस्म के इंतेज़ामी मामलों में से है। अत: अहमदी मर्द हो या औरत उसका किसी ग़ैर अहमदी या ग़ैर मुस्लिम से निकाह की इजाज़त का मामला ख़लीफ़-ए-वक़्त की सवाबदीद (दूरदर्शिता) पर है, किसी और के पास उसका

इख़तेयार नहीं। ख़लीफ़-ए-वक़्त हर केस में हालात के मुताबिक़ फैसला करता है। लिहाज़ा जब मेरे से इजाज़त के लिए राबता किया जाता है तो आपका काम है कि आप अपनी राय के साथ मुझे रिपोर्ट भिजवाएं। आप लोगों का इस से ज़्यादा काम नहीं है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अत्फालुल अहमदिया जर्मनी की virtual मुलाक़ात दिनांक 29 नवंबर 2020 ई. में एक तिफ़्ल के इस प्रश्न पर कि कोरोना वायरस के लिए जो आजकल टीका आया हुआ है क्या वह हमें लगवाना चाहिए या नहीं ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : अगर साबित हो जाए कि वह अच्छा ईलाज है और अगर गर्वनमैंट कहती है कि लगवाओ तो लगवा लो कोई हर्ज नहीं है। लेकिन पहले उसका लोगों को तजुर्बा तो हो जाएगा कि जिनको लगा है उनको लाभ भी होता है या नहीं। सिर्फ सुई चुभोने के लिए न टीका लगवा लो। अगर लाभ होता है तो ज़रूर लगवाना चाहिए, कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर इतने सारे काम इकट्ठे किस तरह कर लेते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : एक यह कि जब वक़्त मिले अपना रोज़ का काम रोज़ करने की आदत डालनी चाहिए। दूसरा यह कि बाअज़ दो दो काम एक वक़्त में भी हो जाते हैं। अब मैं किसी की बातें सन रहा हूँ और साथ कोई ख़त भी पढ़ लूं तो दो काम एक वक़्त में कर सकता हूँ। इस तरह फिर थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम हो जाता है। फिर यह कि इन्सान का इरादा हो कि मैंने अपना काम ख़त्म करना है। जब काम ख़त्म करने का इरादा हो तो फिर इन्सान तवज्जा से काम करता है तो काम ख़त्म हो जाता है। तुम लोग भी मेहनत करोगे तो तुम्हारा काम भी ख़त्म हो जाया करेगा। अगर तुम मेहनत की आदत डाल लो तो तुम भी इसी तरह कर लोगे,यह कोई मसला नहीं है।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपने ख़ुतबात जुमा की तैयारी किस तरह करते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : बाअज़ रिसर्च वाले मज़ामीन होते हैं। मसलन आजकल मैं सहाबा की हिस्ट्री वर्णन कर रहा हूँ। इस में जो रिसर्च वाली टीम मेरे साथ है वह हवाले इत्यादि निकाल के मुझे देते हैं। लेकिन बाअज़ ऐसे ख़ुतबात जो उमूमन तहरीक जदीद पर, वक़्फ़-ए-जदीद पर या तर्बीयत पर मैं देता हूँ उस के लिए मैं ख़ुद कोई न कोई क़ुरआन की आयत ले कर और फिर उस की तशरीह और तफ़सीर करने के लिए मैं ख़ुद अपने हाथ से सारे हवाले तैयार कर लेता हूँ। इस में भी अगर कोई हवाले लेने हों तो यह रिसर्च टीम मेरी मदद कर देती है। कई दफ़ा मैं ख़ुद ही सारे हवाले (रैफ़रैंस) निकाल लेता हूँ और बाअज़ दफ़ा में अपनी टीम से कहता हूँ कि मुझे अमुक अमुक हवाले निकाल के दे दो। फिर मैं ख़ुतबा जुमा तैयार कर लेता हूँ। शेष.....

(अखबार बदर हिन्दी के सौजन्य से)

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786




إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA




يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,




Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards




Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

**Sayed K. A. Rihan, M.B.A.**
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

# B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

# 21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

**Mob. 9934765081**

# Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

**Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221**

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

**MANUFACTURER and WHOLE SELLER**

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

**70D Tiljala Road, Kolkata - 700046**
**e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com**

**LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE**

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
*Hameed Khan Beejali*



# Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

*Ziyafat Khan*
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

# WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۔ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ○
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq　Anwar-ul-Haq
Eajaz-ul-Haq　Rizwan-ulHaq

# Al-Fazal Garments

*Specialist in* : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

## पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

### संकेतों को समझो और अपने फेफड़ों का ध्यान रखो

फेफड़ा हमारे शरीर में ऑक्सीजन का संचार करता है, ब्लड को शुद्ध करता है और सांस को फिल्टर करने का काम करता है। लेकिन यदि किसी व्यक्ति के फेफड़े में कही से वायरस, बैक्टीरिया और फंगस विकसित होना शुरू कर देते हैं, तो फेफड़ों में संक्रमण होने लगता है। फेफड़ों में एयर सैक होता है, मतलब हवा की छोटी-छोटी थैलियां, जो इन्फेक्शन के कारण मवाद या अन्य द्रव से भर जाता हैं। जिसके कारण सांस लेने में परेशानी जैसी समस्याएं होने लगती है। फेफड़ों में संक्रमण क्यों होता है?

फेफड़ों में संक्रमण की स्थिति को लंग इन्फेक्शन कहा जाता है। यह इन्फेक्शन लंग में मौजूद हवा की छोटी-छोटी थैलियों में भी हो सकता है, इसे निमोनिया कहा जाता है। इसके अलावा इन्फेक्शन लंग के बड़े एयरवेज में भी हो सकता है, जिसे ब्रोंकाइटिस के नाम से जाना जाता है। जानिए कि **लंग इन्फेक्शन** कितने प्रकार के होते हैं?

फेफड़ों में संक्रमण के निम्नलिखित प्रकार हो सकते हैं:- **निमोनिया, फ्लू, ब्रॉनकाइटिस, टीबी।**

**फेफड़े खराब होने के लक्षण क्या होते हैं?**

1. खांसी के साथ बलगम और ब्लड आने की समस्या 2. सांस लेने में समस्या होना
3. सीने में दर्द होना 4. मांसपेशियों में दर्द होना 5. गले में दर्द होना
6. घरघराहट की समस्या 7. थोड़े काम या सामान्य क्रिया से जल्दी थकान होना
8. उल्टी-दस्त के साथ जी मिचलाना आदि

**अतः सावधान रहें और अपना और अपनों का बहुत ध्यान रखें ।** (गूगल के माध्यम से)